PUJYA SWAMI DAYANANDA SARASWATI - A brief biography (IN HINDI)

पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती

एक संक्षिप्त जीवनी

१५·०८·१९३० – २३·०९·२०१५

लेखक – एन·अविनाशिलिङ्गम्

अनुवाद – स्वामिनी प्रभानन्दा सरस्वती

प्रकाशक

आर्ष अविनाश फाउण्डेशन

१०४ , ३ स्ट्रीट, टाटाबाद, कोयम्बटूर, ६४१०१२ इण्डिया

फोन : ९१९४८७३७३६३५

ई·मेल : arshaavinash@gmail.com

www.arshaavinash.in

©

कापीराईट (छापने का अधिकार सुरक्षित): **एन. अविनाशिलिङ्गम्**

सर्वाधिकार सुरक्षित

लेखक की लिखित अनुमति से, यह पुस्तक और इसकी विषय वस्तु की नकल की जा सकती है और इसे संचारित किया जा सकता है।

जो इस पुस्तक को छापने में रुचि रखते है, वे लेखक से संपर्क कर सकते हैं।

लेखक की लिखित अनुमति से, इस पुस्तक का सभी भाषाओं में अनुवाद करने के लिए लेखकों का स्वागत है।

लेखक तक पहुँचने के लिए

ई मेल: arshaavinash@gmail.com

यह पुस्तक यहाँ से डाउनलोड की जा सकती है

www.arshaavinash.in

पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती – एक संक्षिप्त जीवनी

१५·०३·१९३० – २३·०९·२०१५

लेखक - एन·अविनाशिलिङ्गम्

अनुवाद - स्वामिनी प्रभानन्दा सरस्वती

जीव यात्रा

मन्जाक्कुड़ी में १५ अगस्त १९३० में एक महात्मा का प्राकट्य हुआ। जीवन की प्रारम्भिक अवस्था में ही स्वामी जी को जीवन-मुक्ति प्राप्त हो गई थी। जब जीव जीवन रहते हुए ज्ञान प्राप्त करता है तो उसे जीवन मुक्ति कहते हैं। पाँच दशकों से भी अधिक समय से स्वामी जी ने पूरे विश्व के हजारों जीवों को जीवन मुक्ति का ज्ञान प्रदान कर मुक्त किया है। स्वामी जी ने २३ सितम्बर २०१५ को विदेह मुक्ति प्राप्त करी।

जब एक ज्ञानी का स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर समष्टि में लीन हो जाते हैं तो वह विदेह मुक्ति कहलाती है।

महान योगदान कर्त्ता

पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती एक महान द्दष्टा, वेदान्त के अग्रगण्य, श्रेष्ठ, सुप्रसिद्ध गुरू एक सशक्त विचारक और लेखक थे।यद्यपि उनके योगदान असंख्य हैं पर अत्याधिक महत्वपूर्ण हैं `आर्ष विद्या गुरूकुलों की स्थापना; सेवा के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया अखिल भारतीय सेवा अभियान (AIM for seva); हिन्दु धर्म आचार्य सभा का आयोजन एवं धर्म रक्षा समिति की स्थापना'।

Sri Gopal Iyer

Smt. Valambal

जन्म

जी॰नटराजन (जो बाद में विश्व में पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से सुविख्यात हुए) का जन्म १५ अगस्त १९३० में तमिलनाडू के तिरुवारुर जिले के मन्जाक्कुड़ी गाँव में हुआ। उनके पिता जी का नाम श्री गोपाल अय्यर एवं माता जी का नाम श्रीमती वालाम्बाल् था। १७ वर्ष पश्चात् उनका जन्मदिन भारत का स्वतन्त्रता दिवस बन गया। उनके जन्म के समय मन्जाक्कुड़ी में केवल एक प्रारम्भिक स्कूल था। इन महात्मा की महिमा है कि आज इस गाँव में के॰जी॰पूर्व से पी॰एच॰डी॰तक की शिक्षा स्वामी दयानन्द सरस्वती एजुकेशनल ट्रस्ट के बैनर तले दी जाती है।

प्रारम्भिक वर्ष

वे बाल्यावस्था में चतुर, साहसी और शरारती थे। वे सदा जो उनके पास होता उसे सांझा करने बाँटने के इच्छुक रहते थे। जब वे केवल ८ वर्ष के थे तब उनके पिता जी का देहान्त हो गया। इस छोटी सी आयु में भी वे शान्त और साहसी थे।उन्होंने विचलित हुए बिना इस सत्यता का सामना किया। उन्होंने हायर सेकेन्डरी ११ वर्ष पर्यन्त स्कूल की शिक्षा प्राप्त की। स्कूल में ही उनका परिचय भगवद् गीता एवं संस्कृत से हो चुका था।वे प्रतिदिन गायत्री जप करते थे। प्रत्येक शुक्रवार को वे सरस्वती पूजा करते थे। उनकी माता जी ने परिवार की एक महिला की मदद से अपनी खेतिहर जमीन को संभाला और अपने चारों बच्चों को बड़ा किया। ये चारों भाई जी॰नटराजन, एम॰जी॰श्रीनिवासन, जी॰रामाचन्द्रन और जी॰धर्मराजन थे। उनकी माता जी ने चारों की अच्छी तरह से देख भाल करते हुए, हिन्दु धर्म के महान गुणों को उनके मन में बैठाते हुए बड़ा किया।

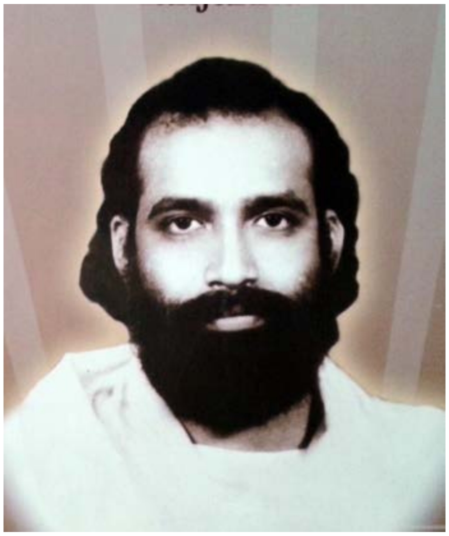

युवावस्था

हायर सेकेण्डरी की शिक्षा पूरी होने के पश्चात् जी·नटराजन चैन्नई गये। उन्होंने टाईप और स्टेनोग्राफी सीखी। उन्होंने अंग्रेजी समाचार पत्रों को पढ़ना शुरू किया। अंग्रेजी साहित्य पर लिखीं पुस्तकें पढ़ी। उन्होंने पहली नौकरी चैन्नई के एक साप्ताहिक प्रकाशन धार्मिक हिन्दु में की। जिसका प्रकाशन अंग्रेजी और तमिल दोनों भाषाओं में होता था। वहाँ उन्होंने पत्रकारिता और छपाई का काम सीखा। उस नौकरी को छोड़ कर वे बैंगलोर गये और एयर फोर्स में सख्त ट्रेनिंग प्राप्त की। लेकिन कुछ ही समय में उन्होंने एयर फोर्स छोड़ दी। उन्हें वहाँ की सख्ती पसन्द नहीं थी। उन्हें लगता था कि वे उनकी बुद्धि को नियन्त्रित करना चाह रहे हैं। बाद में उन्होंने चैन्नई में लेनस् में नौकरी करी जो एक्सप्रेस न्यूज सर्विस लन्डन की प्रतिनिधि थी। वहाँ उन्होंने वास्तविक पत्रकारिता सीखी। उनकी अगली नौकरी वोलकार्ट ब्रदर्स में टाईपिस्ट की थी।

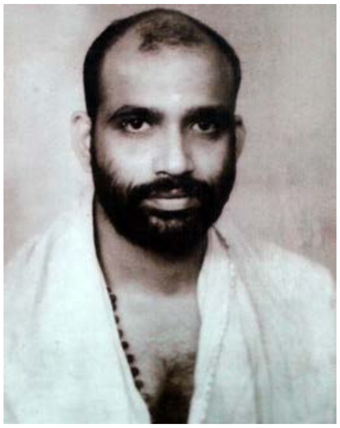

स्वामी चिन्मयानन्द जी के शिष्य

सन् १९५३ में स्वामी चिन्मयानन्द जी मुण्डकोपनिषद् पर ज्ञान यज्ञ के लिए चैन्नई आये। जी· नटराजन अपने चचेरे भाई अक्षय के साथ इस यज्ञ में गये, जिसका उनके युवा मन पर भारी प्रभाव पड़ा। उसके बाद वह पहले जैसे व्यक्ति नहीं रहे। तब से वह स्वामी चिन्मयानन्द जी की सेवा में तत्परता से लगे रहे। यज्ञ के दौरान वे प्रूफ पढ़ने एवं अन्य सेवा के कार्य करते थे।उसके पश्चात् वे प्रातः वेद पाठशाला जाकर वेदों का पाठ करना सीखने लगे। उन्होंने तैत्तरीयोपनिषद् का पाठ करना सीखा। शाम के समय वे संस्कृत का अध्ययन करने लगे। अगले वर्ष स्वामी चिन्मयानन्द जी ने ज्ञान यज्ञ में तैत्तरीयोपनिषद् लिया। उन्होंने पुन विविध प्रकार से अपने गुरू की सेवा की, जैसे कि टाईप करना, प्रूफ पढ़ना, यज्ञ की तैयारी करना, भजन एवं गरीबों को भोजन कराना आदि। अब तक वे नई स्थापित चिन्मया मिशन से पूरी तरह जुड़ गये थे। उन्हें चिन्मया मिशन का सेकेट्री बना दिया गया और उन्होंने पूरी चैन्नई में सत्संगो का आयोजन किया ।

एक बार उन्हें उत्तरकाशी में स्वामी चिन्मयानन्दजी के ज्ञान गुरू स्वामी तपोवन महाराज के दर्शनों का अवसर मिला। स्वामी जी ने कहा कि निज स्वरूप को जानना व्यक्ति का सर्वप्रथम स्वधर्म है। एक तिथि निश्चित करो और संसार त्याग दो।

१९५७ मे वे चिन्मया मिशन की पत्रिका त्यागी के सम्पादक के रूप में बैंगलुरु गये। एक प्रसिद्ध धारणा थी कि आत्मा का अनुभव अपरिछिन्न मैं के रूप में करना है। एक `कालाधीन मैं' `कालातीत

मैं' का अनुभव कैसे कर सकता है? उन्हें यह तो समझ आ गया था कि इस धारणा में समस्या है; लेकिन उन्हें इसका उत्तर नहीं मिला।

Swami Taranandagiri, Swami Chinmayananda & Swami Pranavananda

स्वामी प्रणवानन्द जी के शिष्य

उन्होंने गुड़ीवाड़ा के स्वामी प्रणवानन्द जी के आश्रम में रहकर उनसे अध्ययन किया। स्वामी जी ने आत्म-ज्ञान के लिये वेदान्त को प्रमाण के रूप में देखने का महत्व समझाया। उन्होंने मोक्ष के लिये वासना के क्षय के सिद्धान्त को नकार दिया। पूर्ण उपदेश `मैं', आत्मा सत् चित् आनन्द ब्रह्म हूँ, यह समझने के लिये है। आत्मा के अनुभव करने का प्रश्न नहीं है।` मैं', आत्मा स्वयं प्रकाश है। सदा स्वयं को प्रकट कर रही है ,सदा भास रही है। नटराजन को वेदान्त तात्पर्य समझ में आया, दृष्टि प्राप्त हुई । बाद में शांकर भाष्य के अध्ययन ने इस उपदेश को आत्मसात् करने में मदद की।

संन्यास

४ मार्च १९६२ शिवरात्री के दिन नटराजन, स्वामी दयानन्द सरस्वती बन गये। स्वामी चिन्मयानन्द जी ने उन्हें संन्यास दीक्षा दी। स्वामी चिन्मयानन्द जी ने उन्हें संन्यास के विषय में कुछ नहीं

बताया था। स्वामी चिन्मयानन्द जी का चैन्नई में ज्ञान यज्ञ चल रहा था। उन्होंने जिस घर में स्वंय ठहरे थे, उसी में उन्हें रात व्यतीत करने को कहा। रात में उन्हें व्रत रखने को कहा। उन्हें बताया गया कि सुबह एक नाई आयेगा, वे उनका मुण्डन करेगा। एक पंडित ने आकर विरजा होम सम्पन्न किया। स्वामी चिन्मयानन्द जी को स्वामी दयानन्द जी पर इतना विश्वास था कि बिना किसी पूर्व तैयारी के वे उन्हें संन्यास दे सकते हैं। यह विश्वास आनन्ददायक था।

स्वामी दयानन्द जी साधू जीवन से परिचित होने के लिये उत्तरकाशी और गंगोत्री गये। १९६३ में स्वामी जी मुम्बई में सांदीपनि में रहे। वे चिन्मया मिशन की पत्रिका तपोवन प्रसाद के सम्पादक थे। कुछ समय पश्चात् शास्त्रों का गहराई से अध्ययन करने के लिये वे ऋषिकेश आ गये।

ऋषिकेश के साधू

स्वामी जी आन्ध्रा आश्रम में रहे। वे अपनी प्रातः कालीन भिक्षा काली कम्बली वाले अन्नक्षेत्र से लेते थे और शाम की नेपाली क्षेत्र से, कुछ समय पश्चात् वे पुरानी झाड़ी आ गये। कुछ स्थानीय लोगों की मदद से उन्होंने एक कुटिया बनाई।

स्वामी तारानन्द जी के शिष्य

स्वामी जी ने स्वामी तारानन्द गिरी जी से कैलाश आश्रम में रत्नप्रभा टीका सहित ब्रह्मसूत्र का अध्ययन किया। वे बहुत सवेरे ही वहाँ अध्ययन करने चले जाते थे, उसके बाद सुबह के समय वे

अपनी कुटिया में कुछ ब्रह्मचारियों को पढ़ाते थे। उन्होंने स्वामी विशुद्धानन्द जी से पाणिनी व्याकरण का भी अध्ययन किया। स्वामी तारानन्द जी से किये गये अध्ययन ने उन्हें शास्त्रों में और अधिक स्पष्टता प्रदान की। स्वामी जी कहा करते थे कि १९६४ से १९६७ तक ऋषिकेश में व्यतीत किया गया तीन वर्ष का समय, उनके जीवन का अत्यन्त शान्तिपूर्ण और आनन्द दायक समय था।

स्वामी दयानन्द आश्रम ऋषिकेश

पूज्य स्वामी जी ने प्रथम संस्थान स्वामी दयनन्द आश्रम, ऋषिकेश की स्थापना सन् १९६७ में की । १९८२ में आश्रम का विस्तार हुआ और `आर्ष विद्या पीठम्', ऋषिकेश की स्थापना हुई । यह हिमलय की तलहटी में गंगा नदी के किनारे स्थित है । भक्त जन संध्या के समय यहाँ बैठ कर गंगा की मनमोहक छवि को निहारते हैं । यहाँ वेदन्त एवं संस्कृत के लम्बी अवधि के पठयक्रमों का संचालन किया जाता है । स्वमी जी के शिष्य, पूरे विश्व से यहाँ आकर आध्यात्मिक शिवरों का संचालन करते हैं । पूज्य स्वमी जी को यह स्थान इतना पसन्द था कि उन्होंने अपनी महा समाधी के लिए इस स्थान को चुना ।

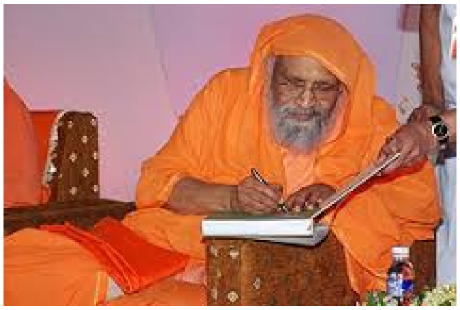

गीता ज्ञान यज्ञ

स्वामी चिन्मयानन्द जी के सुझाव अनुसार उन्होंने संपूर्ण भारत वर्ष में १९६७ से १९७२ तक गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया।

सांदीपनि मुम्बई

स्वामी दयानन्द जी ने सांदीपनि साधनालय मुम्बई में, आचार्य के रूप में दो लम्बी अवधि के पाठ्यक्रमों में १९७२ से १९७९ तक अध्यापन किया। उन्होंने वेदान्त, संस्कृत, वेद पाठ, ध्यान आदि के लिये एक उपयुक्त पाठ्यक्रम की रचना करी।

सांदीपनि वेस्ट

सन् १९७९ में वे सांदीपनि वेस्ट, पिर्सी, कालिफोर्निया, यू॰एस॰ए॰में लम्बी अवधि के कोर्स के आचार्य बने।

जनमानस में प्रवचन

सन् १९८२ में पिर्सी कोर्स के पश्चात् स्वामी दयानन्द जी यात्रा करते हुए, स्वतन्त्र रूप से किसी भी संस्था से जुड़े बिना प्रवचन करते रहे।

सेलोस्बर्ग गुरूकुलम्

१९८५ में अमरीका के भक्तों ने स्वामी जी से एक लम्बी अवधि का कोर्स लेने की प्रार्थना की। उनके अनुरोध पर आर्ष विद्या गुरूकुलम् ,सेलोस्बर्ग, पेनसेल्वानिया, यू॰एस॰ए॰की स्थापना हुई। १९८७ से १९८९ पर्यन्त एक लम्बी अवधि के कोर्स में वहाँ अध्यापन किया। अब सेलोस्बर्ग गुरूकुलम् शिविरों, व्यस्कों, युवाओं एवं बच्चों की कक्षाओं के लिये एक प्रसिद्ध स्थान है। गुरूकुल ने अमरीका में भारतीय संस्कृति के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भगवद् गीता होम स्टडी कोर्स (घर में भगवद् गीता अध्ययन का पाठ्यक्रम)

सेलोस्बर्ग में लम्बी अवधि के कोर्स में ली गई गीता की कक्षाओं के आधार पर, एक विस्तृत एवं गू.ढ `गीता होम स्टडी कोर्स' की रचना हुई। यह स्वामी जी का मानव जाति के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है। जो इसका पूर्ण रूप से अध्ययन करता है, वह गीता के तात्पर्य को समझता है, इस गू.ढ ज्ञान को प्राप्त करता है।

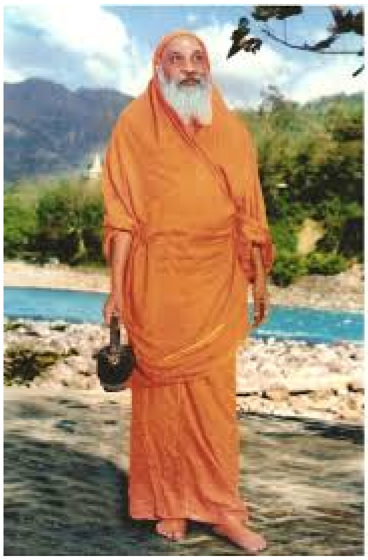

अनैकट्टी गुरूकुलम्

१९९० में `आर्ष विद्या गुरूकुलम् ',अनैकट्टी की स्थापना हुई। इस गुरूकुलम् में इस समय पाँचवां लम्बी अवधि का कोर्स चल रहा है। स्वामी जी के शिष्य यहाँ आध्यात्मिक शिविरों का आयोजन करते हैं। यह गुरूकुलम् वन विभाग द्वारा सुरक्षित वनक्षेत्र के समीप ७० एकड़ में फैला हुआ है। यहाँ भगवान दक्षिणामूर्ति के मन्दिर की दिव्यता, शांत एवं गम्भीर वातावरण यहाँ आने वाले लोगों के मन को बाँध लेता है।

धर्म रक्षा समिति

सन् १९९९ में स्वामी जी ने वैदिक संस्कृति की संपन्नता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिये `धर्म रक्षा समिति' की स्थापना की। जुलाई १९९९ में स्वामी जी ने चैन्नई में एक वक्तव्य में यह संदेश दिया कि `धर्मान्तरण हिंसा है'। इस वक्तव्य ने धर्मान्तरण से होने वाली हिंसा, संघर्ष और द्वन्द्वों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करी।

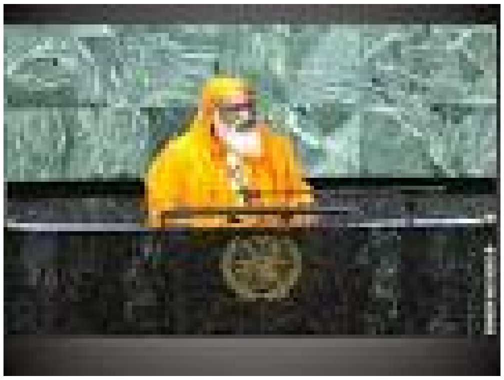

मिलेनियम शान्ति वार्ता, युनाईटिड स्टेट

२००० मे स्वामी जी ने मिलेनियम शान्ति वार्ता को सम्बोधित किया। जिसकी वजह से विश्व में धार्मिक और आध्यात्मिक आचार्यों की सभा का गठन हुआ। जिससे की अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक आस्थाओं पर परस्पर वार्ता हो सके। धार्मिक विविधता की रक्षा के लिये एक सघं का संगठन किया।

हिन्दु धर्म आचार्य सभा

सन् २००० में स्वामी जी ने हिन्दु धर्म आचार्य सभा का आयोजन किया। यह पहली बार हुआ कि हिन्दु धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्य एक साथ आये। सन् २००० से प्रत्येक तीसरे वर्ष हिन्दु धर्म की रक्षा के उपाय और तरीकों पर विचार विमर्श करने के लिये आचार्य मिलने लगे। अब यह हिन्दु धर्म की आधिकारिक आवाज है।

२००६ में तिरुपति घोषणा के द्वारा सभा ने सातों पहाड़ियों को तिरुपति मन्दिर को दिलवाने के लिये कठोर संघर्ष किया। धार्मिक स्थलों की पवित्रता को बनाये रखने के लिये, इसने राम-सेतू एवं

टिहरी-डैम का मुद्दा उठाया।

वैश्विक पहल

आचार्य सभा ने अन्य अन-आक्रामक परंपरायें जैसे कि यहूदी-धर्म ,उनके साथ वार्ता की। २००७ से हिन्दु-यहूदी सभाओं का आयोजन हो रहा है। इस वार्ता से यह निष्कर्ष निकला कि हिन्दु धर्म मूर्ति पूजक नहीं है जैसी की गलत धारणा है।जिसका विनाशकारी प्रभाव देश और इसके लोगों पर है।

हिन्दु-बौद्ध वार्ता में दोनों धर्म के अग्रगण्य नेता इस बात पर सहमत हुये कि पूर्वी-ज्ञान को एक साथ खड़ा होना चाहिये।

२००८ में हेग, नीदरलेण्ड में हुई अन्तर- धार्मिक सभा में, स्वामी जी मानवाधिकारों को पुनः परिभाषित करने वाली धारा को अन्तिम दस्तावेज में सम्मिलित करने में निमित्त बने। धारा ने शान्ति और सांमञ्जस्य के लिये परस्पर सम्मान और सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने घोषणा की धर्मान्तरण, धार्मिक स्वतन्त्रता और परस्पर सम्मान की भावना के विरुद्ध है।

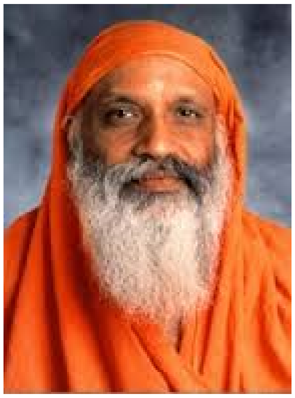

अखिल भारतीय सेवा अभियान (AIM for seva)

सन् २००० में स्वामी जी ने आर्थिक रूप से अत्याधिक पिछड़े हुए भारतीयों तक पहुँचने के लिये एक अभियान-`अखिल भारतीय सेवा अभियान (AIM for seva)' प्रारम्भ किया। वर्तमान में अखिल भारतीय सेवा अभियान १०६ छात्रावास, १० शैक्षणिक संस्थायें, ९ स्वास्थ सेवा केन्द्र चला रहा हैं।

वर्तमान में १६३० दूर-दराज के गाँवों के, ३५०० आर्थिक रूप से अत्यन्त पिछड़े हुए छात्र, निशुल्क इन छात्रावासों का लाभ ले रहें हैं। अब तक १४००० छात्रों को इसका लाभ मिल चुका है।

स्वामी दयानन्द शैक्षणिक ट्रस्ट, मन्जाक्कुड़ी

स्वामी जी के भक्तों ने सन् २००३ में स्वामी जी के जन्म-स्थान मन्जाक्कुड़ी में,` स्वामी दयानन्द शैक्षणिक ट्रस्ट' का गठन किया। ट्रस्ट को `स्वामी दयानन्द कालिज औफ आर्टस, और `सेम्मान्गुडी हायर सेकण्डरी स्कूल', स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐजुकेशनल सोसाइटी से उत्ताधिकार में मिले। ट्रस्ट तीन स्कूल, एक आर्ट्स और सांईस कालिज, चार छात्रावास, एक आयुर्वेदिक स्वास्थ केन्द्र, एक व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्र, एक वृद्धाश्रम और एक वेद पाठशाला चला रही है। वर्तमान में १८० गाँवों के ४८०० छात्र प्रि·के·जी· से पी·एच·डी·तक की शिक्षा यहाँ प्राप्त कर रहें हैं।

नागपुर गुरूकुलम्

सन् २००४ में स्वामी जी ने आर्ष विज्ञान गुरूकुलम् नागपुर का उद्घाटन किया। जब से यह प्रारम्भ हुआ है, यहाँ लम्बी अवधि के पाठ्यक्रम निरन्तर चल रहें है।

कर्नाटक संगीत

उन्होंने संस्कृत में अनेक कृतियों को संगीत दिया। जिन्हें प्रसिद्ध कर्नाटक गायकों ने गाया है। उन्होंने संगीत और नृत्य के अनेक उत्कृष्ट कलाकारों को `आर्ष कला भूषणम्' की उपाधि से सम्मानित किया। उनकी कृति `भो शम्भो' शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों में बहुत प्रसिद्ध है।

वेद पाठशाला

स्वामी जी तमिलनाडू, केरल, आन्ध्रप्रदेश और कर्नाटक में अनेकों वेद पाठशालाओं की स्थापना में सहायक बने।

ओडुवार परंपरा

स्वामी जी ने प्राचीन शिव मन्दिरों में ३५ ओडुवरों की नियुक्ति करी, जिन्हें वे शैव सिद्धान्त को समझाने वाले पान्निरु तिरुमुरै गीतों को गाने के लिए मासिक वेतन देते हैं।

तिरुविदैमारुडुर मन्दिर रथ

स्वामी जी कुम्भकोणम् के निकट तिरुविदैमारुडुर में ,श्री महालिङ्गस्वामी मन्दिर के पाँच रथों के निर्माण में सहायक बने।

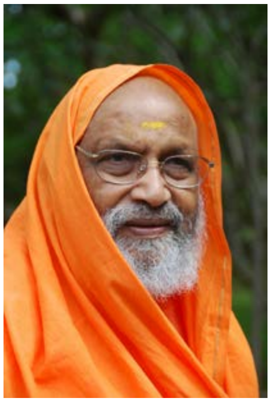

पूर्ण विद्या

स्वामी जी स्कूल के बच्चों को भारतीय संस्कृति की शिक्षा देने के लिए, एक विस्तृत कार्यक्रम की रचना में सहायक बने। यह कार्यक्रम भारत के कुछ स्कूलों में पढ़ाया जाता है और विश्व भर में

अनेकों बच्चों को साप्ताहिक कक्षाओं में इसका शिक्षण दिया जाता है।

आर्ष विद्या रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन ट्रस्ट

स्वामी जी की पुस्तकें `आर्ष विद्या रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन ट्रस्ट', चैन्नई द्वारा बहुत ही सुन्दरता से छापी जा रही हैं।उनकी अनेक पुस्तकों ने भारतीय प्रकाशक संघ नई दिल्ली से पुरस्कार जीते हैं।

डिजिटल लाईब्रेरी

स्वामी जी ने चैन्नई में एक डिजिटल लाईब्रेरी की स्थापना की। जिससे की प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ जो केवल ताड़ पत्रों पर उपलब्ध हैं, उन्हें डिजिटल रूप में परिवर्तित कर उनकी रक्षा की जा सके। अब तक प्राचीन ग्रन्थों के ५००००० से अधिक पेजों को डिजिटल रूप में परिवर्तित किया जा चुका है।

संध्या गुरूकुल

संध्या के समय आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों को, स्कूल में पढ़ाये गये पाठों के विषय में, निशुल्क पढ़ाया जाता है। साथ ही साथ उन्हें भारतीय संस्कृति का भी शिक्षण देते हैं। वर्तमान में ३५० अध्यापक ९००० छात्रों को इस कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षण दे रहें है।

स्वामी जी द्वारा वेबसाईट का शुभारंभ

ई पुस्तकों के लिए निशुल्क वेबसाईट www.arshaavinash.in दिसम्बर ३१, २०१४

इस वेबसाईट का संचालन आर्ष अविनाश फाउण्डेशन करता है।

इस वेबसाईट के द्वारा इंग्लिश, तमिल और संस्कृत भाषाओं में वेदान्त, संस्कृत व्याकरण और भारतीय संस्कृति की पुस्तकें निशुल्क डाउनलोड की जा सकती हैं।

शताभिषेकम् उत्सव

स्वामी जी का शताभिषेकम् उत्सव जुलाई २० से २२, २०११ में कोडिस्सिया कोयम्बटूर में हुआ। जिसमें अभूतपूर्व ५००० शिष्यों ने भाग लिया।

आदि शंकराचार्य पुरस्कार

स्वामी जी आध्यात्मिक जगत में महान संचारक (The Master Communicator) के रूप में जाने जाते थे। वे आध्यात्मिक अध्ययन करने वाले एक प्रारम्भिक साधक से लेकर एक शिक्षित विद्वान पर्यन्त सब को शास्त्रों का तात्पर्य समझाने में समर्थ थे। वे शंकराचार्य के भाष्य के अनुसार

वेदान्त का पूरे विश्व में शिक्षण देते थे। २६ अप्रेल २०१२ में परं आदरणीय श्रृंङ्गेरी मठ के द्वारा उन्हें आदि शंकराचार्य पुरस्कार से विभूषित किया गया।

यु॰एस॰ए॰ का झण्डा

हिन्दु कलेण्डर के अनुसार २८ जुलाई २०१३ को स्वामी जी के ८३वें जन्मदिन पर, उनके सम्मान में आदरणीय कांग्रेस की सदस्य नैन्सी पेलोसी की प्रार्थना पर, अमरीका की राजधानी में सर्वत्र अमरीका का राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।

वेदान्त रत्नम्

स्वामी जी को अद्वैत आश्रम कोलाथूर, केरल द्वारा जनवरी १०, २०१५ को `वेदान्त रत्नम्' नाम से सम्मानित किया गया।

स्वामी जी का संदेश

वैदिक ऋषियों का ज्ञान ही स्वामी जी का संदेश है। **`आप', आत्मा पूर्ण है। आप फिर भी अपने को छोटा और परिच्छिन्न अनुभव करते हैं। केवल इसलिए क्योंकि आप स्वयं अपनी सत्यता नहीं जानते** कि आप वास्तव में क्या हैं। इसलिए आपको आत्म-अज्ञान को दूर करने के लिए आत्म-ज्ञान की आवश्यकता है। उसके लिए आपको एक गुरू चाहियें , जो शास्त्रों को जानते हों और शब्दों का

चतुराई , एक कुशल कलाकार की तरह उपयोग कर सकें। सभी धर्म कहते हैं कि ईश्वर निमित्त कारण है। केवल हिन्दु धर्म कहता है कि ईश्वर केवल निमित्त कारण ही नहीं वे उपादान कारण भी हैं। जब हम समझते हैं कि ईश्वर इस जगत के निमित्त और उपादान कारण दोनों हैं। तब **यहाँ जो कुछ है सब ईश्वर है।** वे यह भी समझाते हैं कि चाहे शारीरिक व्यवस्था हो, मनोविज्ञानिक व्यवस्था हो, चाहे कोई अन्य व्यवस्था, अन्य विधान हम इस जगत में देखें; वह ईश्वरीय व्यवस्था है, ईश्वरीय विधान है। जब हम इस महान व्यवस्था को देखते हैं तो शिकायत का कोई कारण नहीं रहता।

स्वामीजी की अद्वितीयता

स्वामी जी का वेदान्त शास्त्र की व्याख्या करने का तरीका अद्वितीय है। वे इस बात पर जोर देते हैं कि आत्म ज्ञान के लिए केवल वेदान्त ही प्रमाण है। वे इस बात को समझाते हैं कि एक साधक को अधिकारी बनने के लिए मूल्य अनिवार्य हैं। वे महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का प्रयोग, उन्हें इंग्लिश में अनुवाद किये बिना करना पसन्द करते थे। वे अपनी मजाक की आदत से विद्यार्थिओं को पूरी कक्षा में जागरूक बनाये रखते थे। उन्होंने समझाया **कर्मयोग भाव का परिवर्तन है। कर्म ईश्वर अर्पण बुद्धि से करना और फल को प्रसाद बुद्धि से ग्रहण करना कर्म योग है।** कर्म में निपुर्णता कर्मयोग नहीं है।

उन्होंने सम्प्रदाय से अलग भटके हुए सिद्धान्तों को खारिज किया। चाहे वे विश्व प्रसिद्ध गुरूओं द्वारा ही दिए गये हों। मोक्ष के लिए अनेक मार्ग हैं, स्वामी जी ने इसे नकार दिया। उन्होंने इस विचार को नकारा कि सभी धर्म एक लक्ष्य तक ले जाते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि **मोक्ष यहाँ और अभी है।** यह बात केवल हिन्दु धर्म में है। उन्होंने समझाया कि मोक्ष ध्यान से संभव नहीं है। यह केवल शास्त्र अध्ययन से संभव है । उन्होंने यह समझाया कि `वासना का पूर्णतया क्षय' संभव नहीं है। उन्होंने स्पष्ट किया कि वृति रहित मन संभव नहीं हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आत्मा केवल `मैं कौन हूँ', इस विचार से नहीं जानी जा सकती। उनकी स्पष्ट व्याख्या ने वेदान्त से रहस्य का परदा हटा दिया, जटिलता को दूर कर दिया।

वे इतनी प्रभावशाली शैली में व्याख्या करते थे कि श्रोता मन्त्रमुग्ध हो उनका संदेश स्वीकार करने को बाध्य हो जाता था। वे सभी आयु एवं संस्कृति के लोगों से साथ मिलने में अत्यन्त सहज थे।
स्वामी जी गुरूओं के गुरू थे। उनके २५० से अधिक संन्यासी शिष्य एवं २५० से अधिक ग्रहस्थ शिष्य हैं। उनके द्वारा दिया गया सम्प्रदाय अनुसार वेदान्त का उपदेश, उनके शिष्यों की ज्ञान परंपरा द्वारा विश्व भर में निरन्तर दिया जा रहा है।
वे अपनी बढ़ी हुई आयु, शारीरिक असुविधा और पीड़ा के बावजूद उत्साह से आनन्द अभिव्यक्त करते हुए शिष्यों को उपदेश देते थे।

स्वामी जी के गुण

स्वामी जी के गुण दया, सरलता, प्रेम, सेवा, सहानुभूति, स्वीकारना, समभाव आदि उनकी दिव्यता की अभिव्यक्ति हैं। उनका एक गुण जो बहुत प्रसिद्ध है, वह है दया। उनका यह प्रसिद्ध और सशक्त संदेश था कि दया मैं पर केन्द्रित अनन्तता की एक गतिशील अभिव्यक्ति है।
स्वामी जी का वर्णन अगर श्रीमद्भगवद्गीता एवं उपनिषदों में, ज्ञानी को परिभाषित करने के लिए उपयोग किए गये सभी शब्दों से भी किया जाये तो भी वह अपर्याप्त होगा।

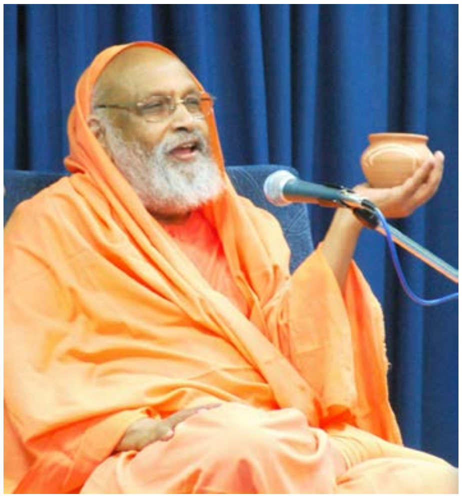

स्वामी जी के उपदेशों का सारांश, जो वेदों का सार है

* अधिक देने वाले बनो और लेने वाले कम। हथियाने की मानसिकता छोड़ो, बाँटने की मानसिकता विकसित करो।

* दूसरों के साथ वैसा मत करो जो आप नहीं चाहते कि दूसरे आप के साथ करें।

* धर्मान्तरण हिंसा है। धर्मान्तरण मानव अधिकारों का उल्लंघन है।

* यहाँ जो कुछ है सब ईश्वर है।

* आपका वास्तविक स्वरूप सत् (अस्तित्व), चित् (चैतन्य), आनन्द (अनन्तता) है। चैतन्य के रूप में आप ब्रह्म से एक हैं।

आर्दश उद्धरण- स्वामी जी के अनमोल वचन

* जो आपके पास सबसे अच्छा है वह जगत को दो, सबसे अच्छा ही आपके पास लौट कर आयेगा।

*जीना तब प्रारम्भ होता है जब आप कुछ ऐसा योगदान करते हो, जो अधिक खुशी, अधिक विद्वत्ता, अधिक स्वतन्त्रता लाता है। अन्यथा तब तक आप केवल अपना जीवन घसीट रहे हो।

*जिस सीमा तक आप दूसरों को जैसे हैं वैसे रहने की स्वतन्त्रता देते हो, उस सीमा तक आप

स्वतन्त्र हो।

*आप दूसरों को बदलना चाहते हो जिससे कि आप स्वतन्त्र हो सको। लेकिन इस तरह काम नहीं बनता। दूसरों को पूर्ण रूप से स्वीकार करो और आप मुक्त हो।

* पुस्तकों और औजारों की पूजा करने के लिये एक विशेष हृदय चहिए, चीजों को देखने का विशेष तरीका चाहिए। ईश्वर की अवधारणा इसे अद्वितीय बनाती है। ईश्वर से कुछ भी अलग नहीं है।

*हम अनेक भगवानों की पूजा नहीं करते। न ही हम एक भगवान को पूजते हैं। हम केवल भगवान की पूजा करते हैं। हम उनका आह्वान विभिन्न नाम और रूपों में करते हैं। उनका प्रत्येक पहलू देवता बन जाता है। एक परिपक्व व्यक्ति कि ईश्वर के प्रति ऐसी दृष्टि है।

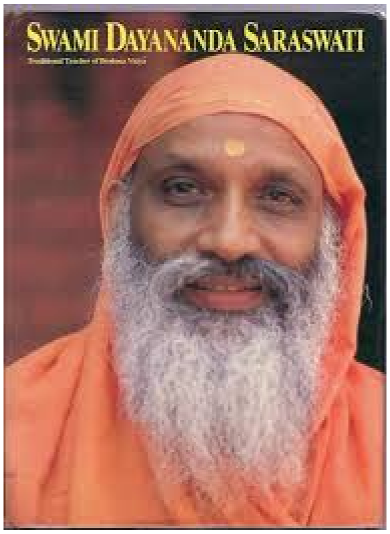

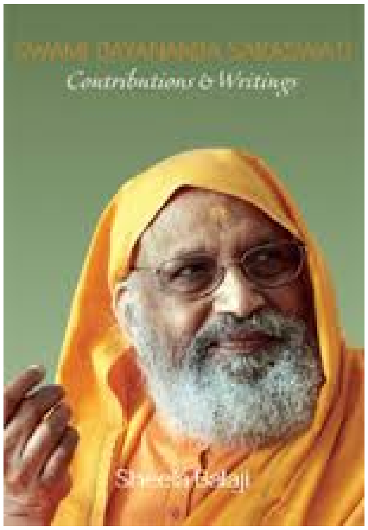

सुझावित अध्ययन

स्वामी जी के विषय में अधिक जानकारी के लिए इन पुस्तकों का अध्ययन करें: ।

Swami Dayananda Saraswati – Contributions & Writings by Smt. Sheela Balaji. Publishers Arsha Vidya Research & Publication Trust

महासमाधि

स्वामीजी ने एक संपूर्ण जीवन जिया। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण सफलता प्राप्त की, जैसे कि वेदान्त का अध्यापन, समाज सेवा, कर्नाटक संगीत, हिन्दु समाज का नेतृत्व और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दु-धर्म को प्रस्तुत करना। उन्होंने २३ सितम्बर २०१५ को ऋषिकेश में महासमाधि प्राप्त की।

दीया खो गया, लेकिन प्रकाश नहीं

पूज्य स्वामी दयानन्द जी-अपने उपदेश, पुस्तकों, ओडियो, विडियो, रचनाओं, उनके शिष्यों के अध्यापन और उनके द्वारा स्थापित विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से, हमारे साथ सदा रहेंगे। ॐ

लेखक

एन. अविनाशीलिंगम

एन. अविनाशीलिंगम एक चार्टर्ड अकाउंटेंट तथा एक कंपनी सेक्रेटरी एवं इ न्फर्मेशन सिस्टम्स ऑडिटर भी हैं।

उन्होने वेदांत और संस्कृत की शिक्षा सन १९९४ से पूज्य स्वा मी दयानंद सरस्वतीजी से प्रारम्भ की? वे वेदांत, संस्कृत और भारतीय संस्कृति के शिक्षक हैं।

उन्होने आर्ष विद्या गुरुकुलम, आनैकट्टि द्वारा, प्रकाशित आर्ष विद्या पत्रिका में, १५० से अधिक लेख लिखे हैं।

वे आर्ष अविनाश फाउंडेशन के फाउंडर एवं मेनेजिंग ट्रस्टी हैं. उनके वेबसैट का उद्घाटन पूज्य स्वामीजी के करकमलो द्वारा डिसेंबर २०१४ में हुआ। इस वेबसाइट के द्वारा वेदांत, संस्कृत व्याकरण और भारतीय संस्कृति पर पुस्तके अँग्रेज़ी, संस्कृत और तमिल में उपलब्द्द हैं।

अनुवादिका

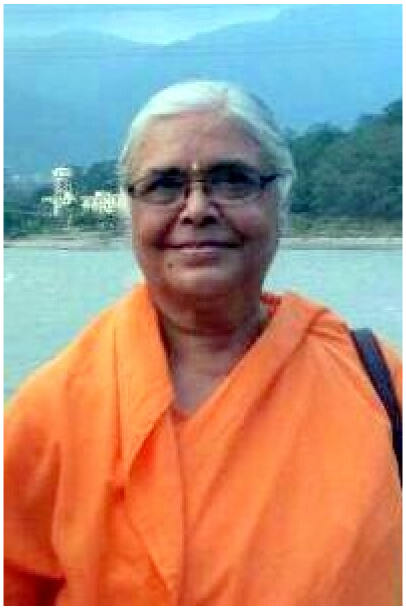

स्वामिनी प्रभानन्दा सरस्वती

प्रभानन्दा पूर्व आश्रम में इलेक्ट्रानिक्स इन्जीनियर थीं। सी. एस. आई. ओ.; पूसा; नई दिल्ली में ३ वर्ष कार्य किया।

१९८२ में पूज्य स्वामी दयानन्द जी का गीता ज्ञान यज्ञ भारतीय विद्या भवन नई दिल्ली में सुनने का अवसर मिला, जिसने जीवन की दिशा बदल दी।

स्वामी प्रबुद्धानन्द जी से भारतीय विद्या भवन दिल्ली में वेदान्त का अध्ययन प्रारम्भ किया।

१९८४ से १९८६ तक सांदीपनि सिद्धबारी, चिन्मया मिशन में वेदान्त का एक कोर्स किया।

१९९२ पर्यन्त चिन्मया मिशन के बैनर तले गीता ज्ञान यज्ञ एवं वेदान्त का अध्यापन

किया।

१९९३ में पुनः पूज्य स्वामी दयानन्द जी के पास आने का अवसर मिला, आर्ष विद्या पीठम्, स्वामी दयानन्द आश्रम ऋषिकेश में रह कर वेदान्त का अध्ययन किया।

१९९४- १९९५ में छः मास आर्ष विद्या गुरूकुलम्, अनैकट्टी में पूज्य स्वामी जी से वेदान्त का अध्ययन किया।

कुछ समय इन्दौर में वेदान्त के अध्यापन के पश्चात्; १९९८ से पूज्य स्वामी जी की आज्ञा से ग्वालियर आकर नियमित रूप से वेदान्त का अध्यापन कर रहीं हैं।

१४ जुलाई २००० में पूज्य स्वामी जी ने ऋषिकेश में गंगा किनारे संन्यास दीक्षा दी।

ॐ

वेबसैट देखे:-www.arshaavinash.in

डाउनलोड करने के लिए निम्नलिखित पुस्तकें उपलब्ध हैं

पूज्य स्वामी दयननंद सरस्वती पर लिखी पुस्तके:

पूज्य स्वामी दयननंद सरस्वती जीवन चरित्र- अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, तमिल

वेदान्त पर अंग्रेजी में पुस्तकें

भारतीय संस्कृति, योग, गीता, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र एवं वेदान्त के ग्रंथ

संस्कृत व्याकरण की पुस्तकें

धातु पाठ, अष्टाध्यायी और वेदान्त के लिए संस्कृत व्याकरण

संस्कृत ग्रन्थ

गीता, उपनिषद् और शंकर भाष्य सहित ब्रह्मसूत्र

भारतीय संस्कृति पर पुस्तकें

योग और भारतीय संस्कृति पर अंग्रेजी में पुस्तकें

पवित्र मंत्रों पर पुस्तकें

अंग्रेजी और संस्कृत में पवित्र मंत्रों की पुस्तकें

वेबसैट पर - प्रश्नोत्तरी में भाग लें

गीता, उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र

आर्ष अविनाश फाउण्डेशन

१०४, थर्ड स्ट्रीट, टाटाबाद, कोयम्बटूर ६४१०१२ , भारत

फोन- ९१ ९४८७३७३६३५

ई मेल arshaavinash@gmail.com

www.arshaavinash.in